प्रियतम

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

कवि परिचय :

कवि सूर्यकांत त्रिपाठी का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल नामक नगर में सन् 1897 ई. में हुआ था । पढ़ाई-लिखाई वहीं हुई । उनका जीवन अभावों और विपत्तियों से पीड़ित रहा । लेकिन उन्होंने किसी विपत्ति के सामने झुकना नहीं सीखा । हमेशा संघर्ष करते रहे । जिन्दगी भर गरीबी में दिन काटे । लेकिन बड़े दानी थे और बड़े स्वाभिमानी भी । वे हिन्दी, संस्कृत, बंगला आदि अनेक भाषाओं के पंडित थे । संगीत के अच्छे जानकार थे । वे छायावादी युग के कवि थे । उन्होंने मुक्तछन्द में कविता लिखना भी आरंभ किया । प्राकृतिक दृश्यों, मानवीय भावों तथा भारतीय संस्कृति को अपने काव्यों का विषय बनाया । अन्याय, अत्याचार व संकीर्णता के प्रति सदा विद्राही बने रहे । परंपरा से हटकर उन्होंने नूतनता को अपनाया । दीन-दु:खी-पीड़ित जनता के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त की । उनकी कविता में जीवन-संग्राम में लड़ने की प्रेरणा निहित है ।

उनकी रचनाएँ : 'परिमल', 'गीतिका', 'अनामिका', 'कुकुरमुत्ता', 'अणिमा', 'बेला', 'नये-पत्ते', 'अपरा' आदि काव्य-संग्रह; 'अलका', 'प्रभावती', 'निरुपमा' आदि उपन्यास; 'चतुरी चमार', 'सुकुल की बीबी' आदि कहानी-संग्रह तथा 'प्रबंध प्रतिमा' निबंध- संग्रह ।

भाव-बोध :

भगवान विष्णु किसान को अपना सबसे बड़ा भक्त मानते हैं । नारदजी को यह बात अच्छी नहीं लगती और वे नम्रतापूर्वक उसका विरोध करते हैं । भगवान् नारद जी की परीक्षा लेते हैं जिसमें वे सफल नहीं हो पाते । अन्त में नारदजी अपनी हार स्वीकार कर लेते हैं । निराला जी प्रस्तुत कविता के जरिए यह संदेश देना चाहते हैं कि कर्म ही ईश्वर है । इसलिए हर एक व्यक्ति को कर्म करना चाहिए । कर्म से निवृत्त रहकर सिर्फ भगवान का नाम लेने से कोई आगे नहीं बढ़ सकता या ईश्वरीय सान्निध्य प्राप्त नहीं कर सकता । कर्म करते हुए तथा सारी जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए भी भगवान का नाम नहीं भूलना चाहिए ।

एक दिन विष्णु के पास गये नारदजी,
पूछा, 'मृत्युलोक में वह कौन है पुण्यश्लोक
भक्त तुम्हारा प्रधान' ?
विष्णुजी ने कहा-
'एक सज्जन किसान है, प्राणों से प्रियतम ।'
नारद ने कहा, 'मैं उसकी परीक्षा लूँगा' ।
हँसे विष्णु सुनकर यह, कहा कि 'ले सकते हो ।'
नारदजी चल दिये, पहुँचे भक्त के यहाँ,
देखा, हल जोत कर आया वह दुपहर को;
दरवाजे पहुँचकर रामजी का नाम लिया;
स्नान-भोजन करके, फिर चला गया काम पर ।
शाम को आया दरवाजे, फिर नाम लिया,
प्रात:काल चलते समय एक बार फिर उसने
मधुर नाम स्मरण किया ।
'बस केवल तीन बार' नारद चकरा गये ।
दिवा-रात्रि जपते हैं नाम ऋषि-मुनि लोग
किन्तु भगवान को किसान ही यह याद आया !
गये वे विष्णुलोक, बोले भगवान् से,
'देखो किसान को,
दिन भर में तीन बार नाम उसने लिया है ।'

बोले विष्णु 'नारदजी' !
आवश्यक दूसरा काम एक आया है,
तुम्हें छोड़कर कोई और नहीं कर सकता ।
साधारण विषय यह, बाद को विवाद होगा,
तब तक यह आवश्यक कार्य पूरा कीजिये,
तैल-पूर्ण पात्र यह लेकर,
प्रदक्षिणा कर आइए भूमण्डल की
ध्यान रहे सविशेष,
एक बूँद भी इससे तेल न गिरने पाए ।'
लेकर चले नारदजी, आज्ञा पर धृतलक्ष्य ।
एक बूँद तेल इस पात्र से गिरे नहीं ।
योगिराज जल्द ही
विश्व-पर्यटन करके लौटे वैकुण्ठ को ।
तेल एक बूँद भी उस पात्र से गिरा नहीं ।
उल्लास मन में भरा था यह सोचकर,
तेल का रहस्य एक अवगत होगा नया ।
नारद को देखकर विष्णु भगवान् ने
बैठाया स्नेह से कहा,
'बतलाओ पात्र लेकर जाते समय कितनी बार
नाम इष्ट का लिया ?'
'एक बार भी नहीं,

शंकित हृदय से कहा नारद ने विष्णु से,

'काम तुम्हारा ही था,

ध्यान उसीसे लगा, नाम फिर क्या लेता और' ?

विष्णु ने कहा, 'नारद' !

उस किसान का भी काम मेरा दिया हुआ है,

उत्तरदायित्व कई लदे हैं एक साथ,

सबको निभाता और काम करता हुआ,

नाम भी वह लेता है, इसी से है प्रियतम ।

नारद लज्जित हुए, कहा, 'यह सत्य है ।'

शब्दार्थ

मृत्युलोक - पृथ्वी, संसार । पुण्यश्लोक - पवित्र यश या कीर्त्तिवाला । प्राणों से प्रियतम - जीवन से भी प्यारा । स्मरण - याद । चकराना - हैरान होना, चकित होना । दिवा-रात्रि - दिन-रात । सविशेष - आवश्यक, जरूरी । तैलपूर्ण - तेल से भरा । प्रदक्षिणा- चक्कर लगाना । धृतलक्ष्य - लक्ष्य में लगा । पर्यटन- यात्रा । वैकुण्ठ - स्वर्ग । उल्लास- हर्ष । अवगत - मालूम होना । इष्ट - अभिलाषित, वांछित । उत्तरदायित्व - जिम्मेदारी । निभाना- पूरा करना । लज्जित - शर्मिन्दा ।

प्रश्न और अभ्यास

1. इन प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए ।

(क) भगवान विष्णु किसे और क्यों अपना श्रेष्ठ भक्त मानते हैं ?

(ख) नारदजी ने विष्णु से क्या सवाल किया और उसके उत्तर में विष्णु ने नारदजी को क्या करनेको कहा ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए ।

(क) नारदजी ने किससे सवाल किया ?

(ख) विष्णुजी ने नारद को क्या उत्तर दिया ?

(ग) नारद ने किसकी परीक्षा लेने की बात कही ?

(घ) किसान ने कब-कब भगवान का नाम स्मरण किया ?

(ङ) नारदजी किस बात से चकरा गये ?

(च) तैलपूर्ण पात्र लेकर नारदजी कहाँ गये ?

(छ) विष्णु ने नारदजी को किस बात पर ध्यान देने को कहा ?

(ज) नारदजी को अपने पास बुलाकर विष्णु ने क्या कहा ?

(झ) विश्व-पर्यटन के दौरान नारदजी ने कितनी बार विष्णु का नाम लिया था ?

(ञ) शंकित हृदय से नारद ने विष्णु से क्या कहा ?

(ट) विष्णु ने किसान को क्यों प्रियतम कहा ?

(ठ) नारदजी ने विष्णु की बात से लज्जित होकर क्या कहा ?

3. सही उत्तर चुनिए ।

(क) किसान ने एक दिन में कितनी बार भगवान का नाम-स्मरण किया ?

(i) चार

(ii) तीन

(iii) एक

(ख) विश्व-पर्यटन करके नारदजी कहाँ लौटे ?

(i) मर्त्यलोक

(ii) विष्णुलोक

(iii) पाताल लोक

(ग) योगिराज कौन हैं ?

(i) किसान

(ii) नारद

(iii) विष्णु

भाषा - ज्ञान

1. नीचे लिखे शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए ।

मृत्युलोक, दिवा, रात्रि, प्रातः, वैकुण्ठ

2. नीचे लिखे शब्दों के विलोम शब्द लिखिए ।

प्रधान, रात्रि, प्रातःकाल, आवश्यक, साधारण, उल्लास

3. विशेष रूप से ध्यान दीजिए कि हिन्दी में केवल दो लिंग होते हैं । क्लीव लिंग या नपुंसक लिंग होता ही नहीं । इसलिए निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा शब्द पुंलिंग का और कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग का है, बताइए ।

भक्त, किसान, दरवाजा, विवाद, आज्ञा, स्मरण, परीक्षा, नाम, बूँद

4. नारद ने कहा, 'मैं उसकी परीक्षा लूँगा' । इस वाक्य में 'लूँगा' क्रिया है, जिससे भविष्यत काल की सूचना मिलती है । निम्न वाक्यों का काल निर्णय कीजिए ।

(क) किसान शाम को घर लौटा ।

(ख) कुत्ता भौंक रहा है ।

(ग) मेरे पिताजी कल दिल्ली जाएँगे ।

(घ) यहाँ का दृश्य दर्शक को आकृष्ट करता है ।

(ङ) बुखार के कारण कल मैं स्कूल नहीं आ पाया ।

5. इन्हें क्या कहते हैं लिखिए ।

(क) जो खेती का काम करता है, वह है <u>किसान</u> ।

(ख) जो कपड़ा बुनने का काम करता है, वह है ..... ।

(ग) जो रोगियों का इलाज करता है, वह है ..... ।

(घ) जो हमारे पास चिट्ठियाँ पहुँचाता है, वह है ..... ।

गृह कार्य

१. अपने प्रिय दोस्त के बारे में वर्णन कीजिए तथा यह बताइए कि वह क्यों प्रिय है ?

●